2018

HINDI

(Second Language)

(Three hours)

Answers to this Paper must be written on the paper provided separately.
*You will **not** be allowed to write during the first **15** minutes.*
This time is to be spent in reading the question paper.
The time given at the head of this Paper is the time allowed for writing the answers.
*This paper comprises two Sections—**Section A** and **Section B**.*
*Attempt **all** the questions from Section **A**.*
*Attempt any **four** questions from Section **B**, answering at least **one** question each from the **two** books you have studied and any **two** other questions.*
The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

SECTION A (40 Marks)

*Attempt **all** questions*

Question 1.

*Write a short composition in **Hindi** of approximately **250** words on any **one** of the following topics:* **[15]**

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए :

(i) *'परोपकार की भावना लोक-कल्याण से पूर्ण होती है।' हमें भी परोपकार से भरा जीवन ही जीना चाहिए। विषय को स्पष्ट करते हुए अपने विचार लिखिए।*

(ii) *''आजकल देश में आवासीय विद्यालयों (Boarding Schools) की बाढ़ सी आ गई है। आवासीय विद्यालयों की छात्रों के जीवन में क्या उपयोगिता हो सकती है ?''— इस प्रकार के विद्यालयों की अच्छाइयों एवं बुराइयों के बारे में बताते हुए वर्तमान में इनकी आवश्यकता पर अपने विचार लिखिए।*

(iii) *संयुक्त परिवार के किसी ऐसे उत्सव के आनन्द का विस्तार से वर्णन कीजिए, जहाँ आपके परिवार के बच्चे-बुजुर्ग सभी उपस्थित थे।*

(iv) *एक ऐसी मौलिक कहानी लिखिए जिसके अन्त में यह वाक्य लिखा गया हो— 'अन्ततः मैं अपनी योजना में सफल हो सका/हो सकी।'*

(v) *नीचे दिये गये चित्र को ध्यान में देखिए और चित्र के आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कोई लेख, घटना अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट सम्बन्ध चित्र से होना चाहिए।*



10 YEARS QUESTION PAPER.COM
ICSE BOARD X
10YearsQuestionPaper.com

Answer 1.

(i) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में वह मिलजुल कर रहता है। एक-दूसरे के सुख-दु:ख में भागीदार होता है। मानव समाज के सुसंचालन के लिए मानव हृदय में परोपकार की भावना का होना नितान्त आवश्यक है। मनुष्य तो स्वभाव से ही परोपकारी जीव है। दूसरों के कष्टों को देखकर हम प्रभावित होते हैं और उन्हें दूर करने का जो भाव हमारे दिल में उत्पन्न होता है तब यहीं परोपकार की भावना का जन्म होता है।

परोपकार शब्द पर + उपकार दो शब्दों से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है दूसरों की भलाई करना।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई,
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।

अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि इस संसार में अपने और दूसरों का भेद ही सांसारिक माया है। अनंत जलराशि का भार ढोने वाली नदियाँ अपने जीवन में सुबह से शाम तक लगातार सिर्फ दूसरों के कल्याण के लिए ही बहती हैं। वृक्ष भी आँधी तूफान सहते हुए चुपचाप खड़े रहते हैं ताकि थके, भूखे लोगों को अपनी छाया तथा फल प्रदान करके उनकी भूख और थकावट दूर कर सके।

मानवता का उद्देश्य तथा मानव जीवन तभी सार्थक हो सकता है जब वह अपने कल्याण के साथ-साथ दूसरों के कल्याण के विषय में भी सोचे। यदि हमारे पास धन है तो निर्धनों की मदद करें यदि विद्या है तो अशिक्षित को शिक्षा प्रदान करें अत: परहित साधना ही सच्ची मानवता है।

हमारे देश में अनेक परोपकारी महान पुरुषों ने जन्म लिया है। जिन्होंने परोपकारी अमरबेल को सींचा है। जैसे—रंतिदेव ने भूख से व्याकुल होने पर भी अपना भोजन से भरा थाल एक भूखे व्यक्ति को दे दिया। महाराज शिवि ने एक कबूतर की प्राण रक्षा के खातिर अपने शरीर का माँस तक दान कर दिया। महाकवि निराला जी का पूरा जीवन ही परमार्थ में बीता है।

परोपकार की शिक्षा किसी भी विद्यालय में नहीं सिखाई जाती है। परोपकार करने की शिक्षा अपने घर परिवार से ही प्राप्त होती है। परोपकार की भावना से मनुष्य का हृदय बिना पानी और बिना साबुन के ही निर्मल बन जाता है। देश के उत्थान के लिए सदैव ही परोपकारी व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि मानव अपने स्वार्थ की भावना को त्याग करके, मानवता के कल्याण के लिए प्रयत्न करे। वास्तव में परोपकार से बड़ा न कोई पुण्य है न कोई धर्म।

(ii) प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा के लिए घर और स्कूल दोनों में पढ़ाई करने की आवश्यकता होती है अधिकांश घर में छोटे परिवार होते हैं और अधिकांश मामलों में माता-पिता दोनों जीविका चलाने के लिए कार्य करते हैं उस समय बच्चों को सबसे ज्यादा माता-पिता के प्यार की आवश्यकता होती है।

ऐसे परिदृश्य में अपने बच्चे को एक बोर्डिंग स्कूल में स्थानान्तरित करना हमेशा बेहतर होता है इसके लिए सबसे अच्छी आयु सात वर्ष की होती है।

बोर्डिंग स्कूल उनके लिए एक अच्छा समाधान है जिन बच्चों के माता-पिता बच्चों को बहुत अधिक समय नहीं दे पाते।

इसके कई लाभ हैं सबसे पहले सभी बच्चों को समान स्तर मिलता है सभी एक ही लाभ प्राप्त करते हैं। सभी बोर्डिंग स्कूल हर एक छात्र के समग्र विकास पर अधिक ध्यान देते हैं और दैनिक दिनचर्या और नियमों का पालन करने के लिए अनुशासन पैदा करने के साथ प्रारम्भ होता है। बोर्डिंग स्कूल में पढ़ने वाले युवाओं के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं।

सभी छात्रों को खेल और अन्य सह-पाठ्यक्रम से जुड़ी गतिविधियों को अच्छी तरह सन्तुलित दिनचर्या के माध्यम से पर्याप्त रूप से अध्ययन कराया जाता है।

इसका फायदा यह भी है कि छात्रों की छोटी संख्या और शिक्षकों के साथ पूर्ण समय बिताने के कारण शिक्षकों और छात्रों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध विकसित हो जाता है। वे भावनात्मक, शारीरिक, शैक्षणिक सभी पहलुओं में छात्र के विकास के साथ शामिल होते हैं और उनके भविष्य में आने वाली हर परिस्थितियों का सामना अच्छे से कर सकें। इसके लिए तैयार करते हैं।

बोर्डिंग स्कूल का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि लोग इसके नकारात्मक पक्ष के बारे में यह सोचते हैं कि यहाँ बच्चों से सख्ती की जा सकती है। वे अपना बचपन जी नहीं पाते हैं। माता-पिता तथा भाई-बहिनों के साथ

भावनात्मक रूप से जुड़ नहीं पाते हैं। छात्र के लिए बोर्डिंग स्कूल में रहना कठिन होता है क्योंकि वहाँ नये लोगों को अपना दोस्त बनाने में समय लगता है परिवार के साथ समय नहीं बिता पाते हैं। नियम और कानून बोर्डिंग स्कूल के बहुत सख्त होते हैं। जिन्हें निभाना कठिन होता है।

लेकिन वर्तमान में अभिभावकों के पास समय की कमी के कारण वे अपने बच्चों को बोर्डिंग स्कूल में डालना पसन्द करते हैं।

(iii) भारत में बड़े गाजे-बाजे और शान से बारातें निकलती दिखाई देती थीं। हिन्दुओं में विवाह एक पवित्र बन्धन और धार्मिक कार्यक्रम माना जाता है।

पिछले साल गर्मियों की छुट्टियों में मुझे एक विवाह में जाने का अवसर मिला। मुझे मेरे मामा के बेटे की शादी में शामिल होने का निमन्त्रण मिला। शादी जून की दस तारीख को थी। मेरे मामा जी का घर एक गाँव में है।

हम एक दिन पहले सपरिवार उनके गाँव पहुँच गये। घर में बहुत रौनक थी। मेरे मामा जी ने हम सबका स्वागत किया। मेरे नाना जी व नानी जी मुझे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। चाय नाश्ते के बाद सभी बातें करने लगे। एक तरफ गाँव की स्त्रियाँ ढोलक पर गीत गा रही थीं। दूसरी तरफ हलवाई मिठाइयाँ बना रहे थे। मेरे मामा जी का घर बहुत बड़ा था। बाहर घर के बुजुर्ग आपस में शादी की तैयारियों के बारे में चर्चा कर रहे थे।

अगले दिन दोपहर में हम सभी बाराती गाड़ियों द्वारा गाज़ियाबाद स्टेशन को रवाना हो गये। क्योंकि हमें वहाँ से ट्रेन द्वारा मुरादाबाद जाना था। बारात में बड़े-बुजुर्ग और बच्चे कुल मिलाकर सौ लोग थे। ट्रेन के आते ही हम सब डिब्बे में चढ़ गये। मामा जी ने पहले ही सबके लिए सीटों का आरक्षण करा लिया था। जिससे किसी को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हुई। ट्रेन में सभी अपने-अपने हम उम्र लोगों के साथ हंसी मजाक कर रहे थे। बच्चे ट्रेन में दौड़ रहे थे। बड़े लोगों ने उन्हें डाँटकर बिठा दिया उसमें मेरा बेटा भी शामिल था। रास्ते में मामा जी ने सभी को नाश्ता दिया जो कि उन्होंने बारात के चलते समय ही रखवा लिया था। इसी तरह हँसते गाते और मस्ती करते हुए हम सभी शाम को करीब चार बजे मुरादाबाद पहुँच गये। स्टेशन पर उतरकर मेरे मामा जी ने सभी को इकट्ठा करके गिनती की। स्टेशन पर कन्या पक्ष के लोग हमारा स्वागत करने के लिए आये थे। वहाँ से व हमें कारों द्वारा धर्मशाला ले गये। जहाँ बारात के ठहरने का बड़ा सुन्दर इन्तजाम किया गया था।

धर्मशाला के कमरों में हमने अपना-अपना सामान रखा। मामा जी ने मुझे वर के साथ ही ठहरने को कहा। धर्मशाला में हम सभी नहा-धोकर तैयार हुए वहाँ हमें नाश्ता कराया गया जो कि बहुत स्वादिष्ट था।

शाम सात बजे बारात के चलने की तैयारी शुरू हो गई। मैंने अपने मामा के लड़के को तैयार किया वह बहुत ही सुन्दर लग रहा था। उसे एक सुन्दर सी सजी हुई घोड़ी पर बिठाया गया। हम लोग रास्ते भर नाचते गाते हुए कन्या पक्ष के घर पहुँचे।

घर पहुँचते ही द्वार पर फूलों की माला पहनाकर हम सभी का स्वागत किया गया। हमें शीतल पेय पीने को दिया गया। दूल्हे को घोड़ी से उतार कर स्टेज पर ले जाया गया। जहाँ दुल्हन के आने पर वरमाला पहनाई गई।

तत्पश्चात् कुछ शादी की कुछ रस्में पूरी की गईं। फिर हम सभी को भोजन के लिए बुलाया गया। खाना बहुत स्वादिष्ट था। तरह-तरह के पकवान थे। हम सभी ने पेट भरकर खाया। भोजन समाप्त करने के बाद फेरों की तैयारियाँ शुरू हो गईं।

घर वालों को छोड़कर बाकी सभी बाराती धर्मशाला में आराम करने चले गये। प्रातः विदाई की तैयारियाँ शुरू हो गईं।

सभी बारातियों को सुबह का नाश्ता कराया गया और बारात विदा हो गई ? हम सभी फिर से ट्रेन द्वारा वापस गाजियाबाद आ गये।

विवाह एक ऐसा आनन्द का उत्सव है जिसमें पूरा परिवार आनन्दित होता है हर उम्र के लोग आनन्द प्राप्त करते हैं।

(iv) किसी शहर में रीता नाम की एक लड़की अपने परिवार के साथ रहती थी। उसके परिवार में उसकी एक छोटी बहन गीता एक छोटा भाई राजू तथा माता-पिता थे। उसके पिता एक सरकारी दफ्तर में काम करते थे। वह एक मध्यमवर्गीय परिवार था।

रीता पढ़ाई लिखाई में बहुत ही होशियार थी। हमेशा कक्षा में प्रथम श्रेणी में आती थी। पढ़ने के साथ-साथ वह खेलने, गाने नाचने में भी होशियार थी। विद्यालय का कोई भी सांस्कृतिक या खेल का कार्यक्रम हो रीता के बिना नहीं होता था। घर के कामों में भी वह अपनी माँ का हाथ बँटाया करती थी। सभी उसको बहुत पसन्द करते थे।

दसवीं कक्षा में उसने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वह बहुत खुश थी। फिर उसने ग्यारहवीं कक्षा में प्रवेश किया। उसी की कक्षा में एक नई लड़की ने प्रवेश लिया जिसका नाम मीरा था। वह एक बड़े व्यवसायी की इकलौती पुत्री थी। जिसको अपने पैसे का घमण्ड था। रीता भी उसकी सहेली बन गई थी। वह अब हर समय मीरा के साथ ही रहती थी। मीरा एक बिगड़ी हुई लड़की थी। फैशन करना, पिक्चरें देखना, पार्टियाँ करना उसके यही शौक थे। रीता भी धीरे-धीरे उसके रंग में रंगने लगी थी। अब उसका मन पढ़ाई में भी नहीं लगता था। उस पर भी फैशन करने का भूत सवार हो गया था। सीधी सादी रीता को अब पार्टियों में मजा आने लगा था।

अब वह घर से भी गायब रहती थी। तथा अपने माता-पिता से नाजायज माँगें करती थी। तथा महँगी ड्रेस या पिक्चर के लिए पैसे माँगती थी। उसके माता-पिता जब उसकी माँगें पूरी नहीं करते थे तो उनसे झगड़ा करती थी। कभी-कभी वह चोरी भी करने लगी थी। उसकी इन आदतों से उसके घर वाले और स्कूल के लोग भी परेशान थे।

एक दिन स्कूल की प्रधानाचार्या ने उसके माता-पिता को बुलाया और रीता के बारे में बताया। उसकी माँ ने प्रधानाचार्या से मिलकर एक योजना बनाई। अगले दिन जब वह सोकर उठी और स्कूल के लिए तैयार होने लगी तो घर में किसी ने उससे बातचीत नहीं की। उसने अपनी छोटी बहन और भाई से भी बात करनी चाही पर कोई नहीं बोला। सभी अपने-अपने काम में लगे रहे। उसके बहन भाई भी उसके साथ स्कूल नहीं गये। उसे अकेले ही जाना पड़ा। स्कूल में भी कक्षा में किसी ने भी उससे बात नहीं की न उसके साथ कोई बैठा। उसको बड़ा अजीब सा लगा। लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया और वह मीरा के साथ घूमने लगी तथा स्कूल के बाद पिक्चर देखने चली गई। रात को देर से घर आने पर भी न उसकी डाँट पड़ी। कई दिन तक ऐसा ही चलता रहा अब उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। वह रात को सो नहीं सकी। सारी रात वह अपने पिछले दिनों किये गये बर्ताव के बारे में सोचती रही और उसे अब पश्चाताप होने लगा वह सारी रात रोती रही।

सुबह उठते ही वह अपनी माँ के पास गई और अपने किये गये व्यवहार के लिए क्षमा माँगी और भविष्य में इस तरह का काम न करने की कसम खाई। माँ पिताजी व भाई बहनों ने उसे माफ कर दिया। विद्यालय में भी उसने सभी अध्यापिकाओं और प्रधानाचार्य जी से माफी माँगी। तभी उसके माता-पिता भी वहाँ आये और उन्होंने रीता को बताया कि तुमको सुधारने के लिए उन्होंने प्रधानाचार्या से मिलकर यह योजना बनाई थी। इस प्रकार मैं अपनी योजना में सफल हो सकी।

(v) चित्र अध्ययन

प्रस्तुत चित्र में एक गाँव दिखाया गया है जिसमें किसी विद्यालय के बच्चे दिखाये गये हैं। इस चित्र में चार लड़कियाँ और तीन लड़के दिखाई दे रहे हैं। सभी बच्चों के हाथ में लैपटॉप दिखाई दे रहे हैं। जो इनको विद्यालय की तरफ से बाँटे गये हैं। जिससे बच्चे नई तकनीकी से शिक्षा प्राप्त कर सके। आजकल शहरों में ही नहीं गाँवों में भी कम्प्यूटर पहुँच गये हैं।

शिक्षा के क्षेत्र को कम्प्यूटर ने बहुत अधिक प्रभावित किया है इसलिए सभी शिक्षण संस्थानों में इसकी शिक्षा अनिवार्य होती जा रही है। इसके द्वारा विश्वभर का ज्ञान पल भर में पी. सी. के स्क्रीन पर देखी जा सकती है। इसकी शिक्षा के बाद, भारी भरकम पुस्तकों को रखने, सँभालने और उन्हें उलटने पटलने की आवश्यकता समाप्त हो जायेगी। पुस्तकों से भरी बड़ी-बड़ी लाइब्रेरियों की जगह सी. डी. ले रही हैं। जिनमें हजारों पृष्ठ की सामग्री एक छोटी-सी डिबिया में सुरक्षित रखी जा सकती है। कम्प्यूटर के द्वारा सारा विश्व एक पाठशाला में बदल गया है।

कम्प्यूटर मशीनी मानव की तरह दिखता है कम्प्यूटर के कार्य का क्षेत्र बड़ा होने के कारण उससे जुड़ी हर जानकारी बहुत जरूरी है इसीलिए विद्यालयों में भी बच्चों को इसकी शिक्षा पर बल दिया गया है इसकी सहायता से बच्चे अपने विषय से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा उस विषय को अच्छे से समझ सकते हैं।

वस्तुतः आज का समय कम्प्यूटरों का ही समय है। कम्प्यूटर की सहायता से बहुत से कार्य सरल हो गये हैं। इनसे पढ़ाई-लिखाई आसान हो गई है जिससे विद्यार्थियों को नई शिक्षा और नई गति प्राप्त हुई है।

Question 2.

Write a letter in ***Hindi*** *in approximately* ***120*** *words on any* ***one*** *of the topics given below :* **[7]**

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए :

(i) *आप अपने विद्यालय के 'सफाई अभियान दल' के नेता हैं। एक योजना के अन्तर्गत आप छात्रों के एक दल को किसी इलाके में सफाई के प्रति जागरूक करने हेतु ले जाना चाहते हैं। अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या जी को इसके लिए स्वीकृति हेतु पत्र लिखिए।*

(ii) *पिछले महीने कुछ प्रयासों द्वारा आपके विद्यालय के छात्रों ने कुछ धनराशि एकत्रित करके मूक-बधिर (deaf and dumb) विद्यालय के विद्यार्थियों की सहायता की थी। इसका वर्णन करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए और बताइये कि हमें समाज के विकलांग लोगों के प्रति कैसा व्यवहार रखना चाहिए व उनकी सहायता के लिए किस प्रकार के प्रयास करने चाहिए।*

Answer 2.

(i) सेवा में,

प्रधानाचार्य जी

दिल्ली पब्लिक स्कूल,

नई दिल्ली

दिनांक : 10-2-18

विषय—लोगों को सफाई के प्रति जागरूक करने के लिए अपने विद्यालय के सफाई दल को ले जाने के लिए स्वीकृति पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि जैसा आप जानते ही हैं कि आजकल देश में स्वच्छ भारत की एक मुहिम छेड़ी जा रही है। देशभर में लोगों में इसके लिए एक अच्छा खासा उत्साह है।

देश के बड़े-बड़े लोग चाहे वो खिलाड़ी हों, व्यवसायी हों, नेता हों या अभिनेता हों सभी सफाई के प्रति लोगों को जागरूक कर रहे हैं। मैं भी अपने विद्यालय के सफाई दल का नेता हूँ। इसलिए मैं भी अपने दल के साथ पास के एक झुग्गी झोंपड़ी बस्ती में रहने वालों को सफाई के प्रति जागरूक करने के लिए जाना चाहता हूँ। उन लोगों को सफाई के लाभ बताना चाहता हूँ। अत: आपसे निवेदन है कि आप हमारे दल को वहाँ ले जाने की स्वीकृति प्रदान करें। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद !

आपका आज्ञाकारी शिष्य

राजेश कुमार

कक्षा : 10 अ

(ii) प्रिय मित्र रमेश

सप्रेम नमस्ते

आशा करता हूँ कि वहाँ पर सब कुशल मंगल होंगे। यहाँ पर सभी ठीक प्रकार से हैं। तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है ? मेरी परीक्षाएँ शुरू हो गई हैं। आशा है तुम्हारी परीक्षाएँ भी अच्छी चल रही होंगी।

मैं तुम्हें एक बात बताना चाहता हूँ। पिछले कुछ महीनों से हमारे विद्यालय की टीम ने एक अभियान चलाया था जिसमें हमने मूक-बधिर छात्रों की सहायता के लिए धनराशि एकत्रित की थी और उन लोगों की पढ़ाई तथा खाने-पीने रहने और कपड़े आदि में मदद की थी। इसके लिए सभी ने हमारी सराहना की थी। तुम भी इस प्रकार अपने विद्यालय के छात्रों की एक टीम बनाकर मदद कर सकते हो मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि किस प्रकार और कैसा व्यवहार करना चाहिए कि इनकी जिन्दगी में रोशनी की एक किरण बनकर सपनों को साकार कर सकते हैं।

हमें विकलांगों के प्रति सकारात्मक रहना चाहिए। किसी भी विकलांग जैसे नेत्रहीन, शारीरिक असमर्थता से ग्रसित हो तो उनको सड़क पार करवाने, बस में बैठाने-उतारने में मदद करनी चाहिए। विकलांग छात्रों को सरकारी योजनाओं से लाभ प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं किसी विकलांग छात्र के स्कूल की फीस या दवा का खर्च उठा सकते हैं। इस प्रकार छोटी-छोटी मदद करके हम उनकी सहायता कर सकते हैं। शेष फिर बताना कि क्या तुमने ऐसा करने की कोशिश की। घर पर अपने सभी बड़ों को चरणस्पर्श तथा छोटे को प्यार देना पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

तुम्हारा मित्र,

सुरेश

15/13, राजपुर रोड

दिल्ली

दिनांक : 10-3-18

Question 3.

Read the passage given below and answer in ***Hindi*** *the questions that follow, using your own words as far as possible :*

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए :

सूर्य अस्त हो रहा था। पक्षी चहचहाते हुए अपने नीड़ की ओर जा रहे थे। गाँव की कुछ स्त्रियाँ अपने घड़े लेकर कुएँ पर जा पहुँची। पानी भरकर कुछ स्त्रियाँ तो अपने घरों को लौट गईं, परन्तु चार स्त्रियाँ कुएँ की पक्की जगत पर ही बैठकर आपस में बातचीत करने लगीं। तरह-तरह की बातचीत करते-करते बात बेटों पर जा पहुँची। उनमें से एक की उम्र सबसे बड़ी लग रही थी। वह कहने लगी— "भगवान सबको मेरे जैसा ही बेटा दे। वह लाखों में एक है। उसका कंठ बहुत मधुर है। उसके गीत को सुनकर कोयल और मैना भी चुप हो जाती हैं। सच में मेरा बेटा तो अनमोल हीरा है।"

उसकी बात सुनकर दूसरी अपने बेटे की प्रशंसा करते हुए बोली— "बहन मैं तो समझती हूँ कि मेरे बेटे की बराबरी कोई नहीं कर सकता। वह बहुत ही शक्तिशाली और बहादुर है। वह बड़े-बड़े पहलवानों को भी पछाड़ देता है। वह आधुनिक युग का भीम है। मैं तो भगवान से कहती हूँ कि वह मेरे जैसा बेटा सबको दे।"

दोनों स्त्रियों की बात सुनकर तीसरी भला क्यों चुप रहती ? वह भी अपने को रोक न सकी। वह बोल उठी— "मेरा बेटा साक्षात् बृहस्पति का अवतार है। वह जो कुछ पढ़ता है, एकदम याद कर लेता है। ऐसा लगता है बहन, मानो उसके कंठ में सरस्वती का वास हो।"

तीनों की बात सुनकर चौथी स्त्री चुपचाप बैठी रही। उसका भी एक बेटा था। परन्तु उसने अपने बेटे के बारे में कुछ नहीं कहा।

जब पहली स्त्री ने उसे टोकते, हुए पूछा कि उसके बेटे में क्या गुण है, तब चौथी स्त्री ने सहज भाव से कहा— "मेरा बेटा ना गंधर्व-सा गायक है, न भीम-सा पहलवान और न ही बृहस्पति-सा बुद्धिमान।" यह कह कर वह शान्त बैठ गई। कुछ देर बाद जब वे घड़े सिर पर रखकर लौटने लगीं, तभी किसी के गीत का मधुर स्वर सुनाई पड़ा, गीत सुनकर सभी स्त्रियाँ ठिठक गईं। पहली स्त्री शीघ्र ही बोल उठी— "मेरा हीरा गा रहा है। तुम लोगों ने सुना, उसका कंठ कितना मधुर है।" तीनों स्त्रियाँ बड़े ध्यान से उसे देखने लगी। वह गीत गाता हुआ उसी रास्ते से निकल गया। उसने अपनी माँ की तरफ ध्यान नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद दूसरी का बेटा दिखाई दिया। दूसरी स्त्री ने बड़े गर्व से कहा, "देखो मेरा बलवान बेटा आ रहा है। वह बातें कर ही रही थीं कि उसका बेटा भी उसकी ओर ध्यान दिये बगैर निकल गया।"

तभी तीसरी स्त्री का बेटा उधर से संस्कृत के श्लोकों का पाठ करता हुआ निकला। तीसरी ने बड़े गद्‌गद् स्वर में कहा, "देखो, मेरे बेटे के कंठ में सरस्वती का वास है। वह भी माँ की ओर देखे बिना आगे बढ़ गया।"

वह अभी थोड़ी दूर गया होगा कि चौथी स्त्री का बेटा भी अचानक उधर से आ निकला। वह देखने में बहुत सीधा-सादा और सरल प्रकृति का लग रहा था। उसे देखकर चौथी स्त्री ने कहा, "बहन, यही मेरा बेटा है।" तभी उसका बेटा पास आ पहुँचा। अपनी माँ को देखकर रुक गया और बोला, "माँ लाओ मैं तुम्हारा घड़ा पहुँचा दूँ। माँ ने मना किया, फिर भी उसने माँ के सिर से पानी का घड़ा उतारकर अपने सिर पर रख लिया और घर की ओर चल पड़ा।

तीनों स्त्रियाँ बड़े ही आश्चर्य से देखती रहीं। एक वृद्ध महिला बहुत देर से उनकी बातें सुन रही थी। वह उनके पास आकर बोली, "देखती क्या हो ? यही सच्चा हीरा है।"

(i) *पहली तथा दूसरी स्त्री ने अपने-अपने बेटे के विषय में क्या कहा ?* **[2]**

(ii) *तीसरी स्त्री ने अपने बेटे को 'बृहस्पति का अवतार' क्यों कहा ?* **[2]**

(iii) *पहली स्त्री द्वारा पूछे जाने पर चौथी स्त्री ने क्या कहा ?* **[2]**

(iv) *चौथी स्त्री के बेटे ने अपनी माँ के साथ कैसा व्यवहार किया, यह देखकर तीनों स्त्रियों को कैसा लगा ?* **[2]**

(v) *बच्चों को अपने माता-पिता के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ? समझाइए।* **[2]**

Answer 3.

(i) पहली स्त्री ने कहा भगवान सबको मेरे जैसा ही बेटा दे, उसका कंठ बहुत मधुर है। उसके गीत को सुनकर कोयल और मैना भी चुप हो जाते हैं। मेरा बेटा अनमोल हीरा है।

दूसरी स्त्री ने कहा, मेरा बेटा बहुत ही शक्तिशाली और बहादुर है। बड़े-बड़े पहलवानों को पछाड़ देता है। वह आधुनिक युग का भीम है।

(ii) तीसरी स्त्री ने अपने बेटे को बृहस्पति का अवतार इसलिए कहा क्योंकि वह जो कुछ पढ़ता है, एकदम याद कर लेता है। ऐसा लगता है मानो उसके कंठ में सरस्वती का वास हो।

(iii) चौथी स्त्री ने कहा कि उसका बेटा न गंधर्व सा गायक है और न भीम सा बलवान और न ही बृहस्पति सा बुद्धिमान।

(iv) चौथी स्त्री के बेटे ने जब अपनी माँ को पानी का घड़ा लेकर आते हुए देखा तो अपनी माँ के पास पहुँच कर बोला "माँ लाओ मैं तुम्हारा घड़ा पहुँचा दूँ। माँ के मना करने पर भी उसने घड़ा अपने सिर पर रख लिया और घर की ओर चल दिया। यह देखकर तीनों स्त्रियाँ आश्चर्यचकित रह गईं।

(v) हम जीवन में चाहे कितनी भी उन्नति क्यों न करें लेकिन हमें अपने माता-पिता के साथ सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिए एव उनकी आज्ञा को सर्वोपरि समझें। क्योंकि हमारी उन्नति के पीछे उनका त्याग, बलिदान व प्रेरणा शक्ति होती है। इसलिए जहाँ तक हो सके उनकी मदद करें और उन्हें खुशियाँ प्रदान करें।

Question 4.

Answer the following according to the instructions given :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए :

(i) *निम्नलिखित शब्दों में से **दो** शब्दों के विलोम लिखिए—* **[1]**

कीर्ति, निर्मल, विजय, निर्दोष।

(ii) *निम्नलिखित शब्दों में से किसी **एक** शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—* **[1]**

धनवान, किनारा, दूध।

(iii) *निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए—* **[1]**

अपेक्षा, गुण।

(iv) *निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं **दो** शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए—* **[1]**

प्रदर्षनी, लच्छमी, अपरीचीत।

(v) *निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए—* **[1]**

आसमान से बातें करना, उड़ती चिड़िया पहचानना।

(vi) *कोष्ठक में दिए गए वाक्यों निर्देशानुसार में परिवर्तन कीजिए—*

(a) *मोहन और रमेश सच्चे मित्र थे।*

('मित्रता' शब्द का प्रयोग कीजिए।) **[1]**

(b) *मुझसे कोई भी बात कहने में संकोच न करें।*

(रेखांकित के लिए एक शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्य को पुनः लिखिए।) **[1]**

(c) *शिक्षक ने अपने शिष्य को आदेश दिया।*

(वचन बदलिए) **[1]**

Answer 4.

(i) विलोम शब्द—

कीर्ति	—	अपकीर्ति
निर्मल	—	मलिन
विजय	—	पराजय
निर्दोष	—	दोषी

(ii) दो-दो पर्यायवाची शब्द—

धनवान	—	धनी, धनाढ्य
किनारा	—	तट, कगार
दूध	—	पय, दुग्ध

(iii) अपेक्षा — अपेक्षित
गुण — गुणी
(iv) प्रदर्षनी — प्रदर्शनी
लच्छमी — लक्ष्मी
अपरीचीत — अपरिचित

(v) **(a) आसमान से बातें करना**—आजकल की इमारतें आसमान से बातें करती हैं।

(b) उड़ती चिड़िया पहचानना—रामू के दादा जी इतने अनुभवी हैं कि उड़ती चिड़िया पहचानने में देर नहीं लगाते।

(vi) (a) मोहन और रमेश में सच्ची मित्रता थी। (b) मुझसे कोई भी बात निस्संकोच करें।
(c) शिक्षकों ने अपने शिष्यों को आदेश दिये।

SECTION B (40 Marks)

*Attempt **four** questions from this Section.*
*You must answer at least **one** question from each of the **two** books you have studied and any **two** other questions.*

साहित्य सागर—संक्षिप्त कहानियाँ
(Sahitya Sagar—Short Stories)

Question 5.

*Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :*

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िये और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

आनन्दी की त्यौरी चढ़ गई। झुँझलाहट के मारे बदन में ज्वाला-सी दहक उठी। बोली, "जिसने तुमसे यह आग लगाई है, उसे पाऊँ तो मुँह झुलस दूँ। **['बड़े घर की बेटी'— प्रेमचंद]**

[Bade Ghar Ki Beti— Premchand]

(i) *आनन्दी की त्यौरी क्यों चढ़ी हुई थी ? वह किसका इंतजार कर रही थी ?* **[2]**
(ii) *श्रीकंठ सिंह ने आनन्दी से क्या जानना चाहा ?* **[2]**
(iii) *इससे पहले लालबिहारी और बेनीमाधव सिंह श्री कंठ सिंह से क्या कह चुके थे ?* **[3]**
(iv) *आनन्दी से घटना का हाल जानकर श्रीकंठ सिंह को कैसा लगा ? उन्होंने अपने पिता से क्या कहा ?* **[3]**

Answer 5.

(i) आनन्दी की त्यौरियाँ इसलिए चढ़ गई थी क्योंकि उसके देवर लाल बिहारी ने खाने में घी न डालने पर उसके साथ बुरा बर्ताव किया था तथा खड़ाऊ फेंक कर मारी थी। इसलिएं आनन्दी अपने पति श्रीकंठ सिंह का इन्तजार कर रही थी।

(ii) श्रीकंठ सिंह ने आनन्दी से लड़ाई का सच जानना चाहा कि असली बात क्या है। लड़ाई किस बात पर हुई थी ?

(iii) इससे पहले लालबिहारी और बेनी माधव श्रीकंठ से कह चुके थे कि भैया आप जरा भाभी को समझा दीजिएगा कि मुँह सँभालकर बातचीत किया करे नहीं तो एक दिन अनर्थ हो जायेगा। बेनी माधव ने कहा कि बहू बेटियों का यह स्वभाव अच्छा नहीं कि मर्दों के मुँह लगें। अपने मैके के सामने हमें कुछ समझती ही नहीं।

(iv) आनन्दी से घटना का हाल जानकर श्रीकंठ सिंह की आँखें लाल हो गईं और बोले यहाँ तक हो गया छोकरे का साहस। उन्होंने अपने पिता से कहा दादा अब इस घर में मेरा निर्वाह न होगा।

Question 6.

*Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :*

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"रात को बड़े जोर का झक्कड़ चला। सेक्रेटेरियट के लॉन में जामुन का पेड़ गिरा। सुबह को जब माली ने देखा, तो उसे पता चला कि पेड़ के नीचे एक आदमी दबा पड़ा है।" **['जामुन का पेड़— कृष्ण चंदर]**

[Jamun ka Ped — Krishna Chander]

(i) *माली ने यह देखकर क्या किया और क्यों ?* [2]

(ii) *पहले, दूसरे और तीसरे क्लर्क ने क्या कहा ? क्या तीसरे क्लर्क को उस दबे हुए आदमी से सहानुभूति थी ?* [2]

(iii) *माली ने क्या सुझाव दिया ? मोटे चपरासी की बात सुनकर माली क्या बोला ?* [3]

(iv) *कहानी के अन्त में क्या हुआ था ? देर से मिलने वाला न्याय महत्वहीन होता है कैसे ?* [3]

Answer 6.

(i) माली यह देखकर चपरासी के पास गया क्योंकि वह मिलकर पेड़ के नीचे दबे आदमी को निकाल सकें। क्योंकि पेड़ के गिरने से उसके नीचे एक आदमी दब गया था।

(ii) पहले क्लर्क ने कहा, ''बेचारा जामुन का पेड़ कितना फलदार था।'' दूसरे ने कहा, ''इसकी जामुनें कितनी रसीली होती थीं। तीसरे क्लर्क ने कहा, ''मैं फलों के मौसम में झोली भरकर ले जाता था। मेरे बच्चे इसकी जामुनें कितनी खुशी से खाते थे।'' नहीं, तीसरा क्लर्क स्वार्थी था उसे उस दबे हुए आदमी से कोई सहानुभूति नहीं थी। उसे सिर्फ जामुनों की चिन्ता थी।

(iii) माली ने सुझाव दिया कि पेड़ को हटाकर इसे जल्दी से निकाल लेना चाहिए। यह सुनकर एक सुस्त कामचोर मोटा चपरासी बोला ''पेड़ का तना बहुत मोटा और वजनी है। इस पर माली ने कहा अगर सुपरिटेंडेंट साहब हुक्म दें तो अभी पन्द्रह बीस माली, चपरासी और क्लर्क लगा कर दबे हुए आदमी को निकाला जा सकता है।

(iv) कहानी का अन्त इस प्रकार हुआ कि जब तक दबे हुए आदमी को निकालने का फैसला आया तब तक दबा हुआ आदमी मर चुका था। इसीलिए कहते हैं कि देर से मिलने वाला फैसला महत्वहीन होता है। क्योंकि सरकारी कामों की लापरवाही से एक आम आदमी समाज में अपनी समस्याओं को लेकर संघर्ष करता रहता है लेकिन सरकारी विभाग समयानुसार उसकी कोई सहायता नहीं कर सकता है।

Question 7.

Read the extract given below and asnwer in ***Hindi*** *the questions that follow :*

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

''पर, 'सब दिन होत न एक समान' अकस्मात् दिन फिरे और सेठ को गरीबी का मुँह देखना पड़ा। संगी-साथियों ने भी मुँह फेर लिया और नौबत यहाँ तक आ गई कि सेठ व सेठानी भूखे मरने लगे।''

[महायज्ञ का पुरस्कार— यशपाल]

[Mahayagya Ka Puraskar — Yashpal]

(i) *अकस्मात् बुरा समय किसका आ गया था तथा बुरा समय आने से पहले उसकी दशा कैसी थी ?* [2]

(ii) *अपना बुरा समय दूर करने के लिए सेठ ने क्या उपाय सोचा ? इस उपाय के लिए उन्हें किसके पास जाना पड़ा ?* [2]

(iii) *सेठ ने मार्ग में कौन-सा महायज्ञ किया था ? क्या वह वास्तव में महायज्ञ था ? समझाकर लिखिए।* [3]

(iv) *कहानी का उद्देश्य लिखिए।* [3]

Answer 7.

(i) अकस्मात् बुरा समय एक धनी सेठ का आ गया था। बुरा समय आने से पहले वे बहुत उदार थे। धर्मपरायण थे कि कोई भी साधु सन्त या याचक उनके दरवाजे से खाली हाथ नहीं जाता था। सभी को भरपेट भोजन मिलता था। कितने ही दीन-दुःखियों को धन देकर दान दिया करते थे।

(ii) अपना बुरा समय दूर करने के लिए सेठ ने अपने अच्छे समय में किये गये यज्ञ को बेचने का निश्चय किया। इसके लिए उन्हें दस-बारह कोस की दूरी पर कुन्दनपुर नगर में एक धन्ना सेठ के पास उनकी सेठानी को यज्ञ बेचने के लिए जाना था।

(iii) सेठ ने मार्ग में भूख से व्याकुल एक छटपटाते कुत्ते को अपनी सारी रोटी खिला दी थी। सेठ के अनुसार, यह महायज्ञ नहीं था क्योंकि किसी भूखे को भोजन कराना कोई यज्ञ नहीं बल्कि निःस्वार्थ भाव से किया गया मानवोचित कार्य था। भूखे को अन्न देना सभी का कर्तव्य है।

10 YEARS QUESTION PAPER.COM
ICSE BOARD X
10YearsQuestionPaper.com

(iv) प्रस्तुत कहानी 'महायज्ञ का पुरस्कार' यशपाल जी द्वारा लिखी गई कहानी है। इस कहानी में लेखक ने बताया है कि मानव सेवा ही ईश्वर सेवा होती है तथा जीवों के दु:ख दूर करने से हम ईश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं। जैसे इसमें सेठजी ने अपने भोजन को स्वयं न खाकर एक भूखे, निर्बल, मरियल कुत्ते को खिला दिया था। ऐसा केवल नि:स्वार्थ भाव से उन्होंने किया था। लेखक ने बताया है भूखे को भोजन देना सभी का कर्तव्य है। इससे ईश्वर प्रसन्न होते हैं।

साहित्य सागर – पद्य
(Sahitya Sagar – Poems)

Question 8.

Read the extract given below and answer in ***Hindi*** *the questions that follow :*

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

लाठी में गुण बहुत है, सदा राखिये संग।
गहरि नदी नारी जहाँ वहाँ बचावै अंग॥
वहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहैं मारै।
दुश्मन दावागीर, होय तिनहूँ को झारै।।
कह 'गिरिधर कविराय' सुनो हो धूर के बाठी।।
सब हथियार न छाँड़ि, हाथ महँ लीजै लाठी।।

[कुंडलियाँ – गिरिधर कविराय]
[Kundaliya – Giridhar Kavi Rai]

(i) *इस कुंडली में किसकी उपयोगिता बताई गई है ? कवि ने किस समय मनुष्य को लाठी रखने का परामर्श दिया है ?* **[2]**

(ii) *लाठी हमारे शरीर की सुरक्षा किस प्रकार करती है ?* **[2]**

(iii) *लाठी किन तीनों से निपटने में सहायक होती है और किस प्रकार ?* **[3]**

(iv) *कवि सब हथियार छोड़कर लाठी लेने की बात क्यों कर रहे हैं ? अपने विचार व्यक्त करते हुए कुंडलियाँ लेखन का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।* **[3]**

Answer 8.

(i) इस कुंडली में लाठी की उपयोगिता बताई गई है। कवि ने लाठी रखने का परामर्श तब दिया है जब हमें रास्ते में नदी या नाला मिलता है तो उसकी गहराई जानने के लिए, अगर जंगली जानवरों से सामना हो तो उनसे अपनी रक्षा के लिए और यदि कोई दुश्मन सामने आ जाये तो उसको पराजित करने के लिए लाठी अपने पास रखनी चाहिए।

(ii) लाठी हमारे शरीर की दुश्मनों से रक्षा करती है। नदी नाले को पार कराने से रक्षा करती है तथा जानवरों से रक्षा करती है।

(iii) पहला, रास्ते में यदि कोई नदी या नाला आ जाता है तो लाठी के सहारे से उसे पार कर सकते हैं।

दूसरा, दुश्मन से हमारी रक्षा करती है लाठी के द्वारा उससे लड़कर उस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

तीसरा, जंगली जानवरों से लाठी हमारी रक्षा करती है, यदि कोई कुत्ता या जानवर आ जाये तो ये उसे भगा सकती है।

(iv) कवि सब हथियार छोड़कर लाठी लेने की बात इसलिए कर रहा है क्योंकि साधारण वस्तु भी जीवन में उपयोगी होती है। लाठी जैसी साधारण वस्तु भी हमारे जीवन में हर कदम पर हमारी मदद करती है और हमारी रक्षा करती है।

Question 9.

Read the extract given below and answer in ***Hindi*** *the questions that follow :*

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

''चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।
ठहरो, अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा।
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम,
तुम्हारे दुःख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।''

[भिक्षुक— सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला']

[Bhikshuk — Suryakanth Tripathi 'Nirala']

(i) *पहली दो पंक्तियों में कवि ने क्या दृश्य प्रस्तुत किया है ?* [2]

(ii) *इस भावुक दृश्य से हमारे हृदय में क्या भाव उत्पन्न होते हैं ?* [2]

(iii) *क्या भिक्षुकों की मदद करना मानवीय धर्म नहीं है ? यहाँ अभिमन्यु का उदाहरण कवि ने क्यों दिया है ?* [3]

(iv) *प्रस्तुत कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।* [3]

Answer 9.

(i) कवि ने प्रथम दो पंक्तियों में बताया है कि भिक्षुक के बच्चे अपनी भूख मिटाने के लिए सड़क पर दूसरों के द्वारा फेंके हुए झूठे पत्तल चाट रहे हैं और वहाँ खड़े कुत्ते भी उनसे वह झूठी पत्तलें छीननें के लिए तैयार खड़े हैं।

(ii) इस दृश्य को देखकर हमारे हृदय में उनके प्रति प्रेम, दया और सहानुभूति के भाव उत्पन्न होते हैं। उनके प्रति हमारे मन में संवेदनाएँ जाग्रत होती हैं।

(iii) भिक्षुकों की मदद करना हमारा मानवीय धर्म है। यहाँ अभिमन्यु का उदाहरण इसलिए दिया है क्योंकि भिक्षुकों को भी अभिमन्यु की तरह समाज के निर्दयी लोगों का साहस से सामना करना पड़ता है। अभिमन्यु की तरह ही उसे इस भुखमरी, गरीबी के चक्रव्यूह से बाहर निकलने का प्रयास करना पड़ता है।

(iv) प्रस्तुत कविता लेखन का मुख्य भाव—भिखारी के प्रति अन्तर्वेदना को जाग्रत करना है तथा एक गरीब किस प्रकार से अपना दुखमय जीवन व्यतीत करता है और हमारी उसके प्रति किस प्रकार की भावनाएँ होनी चाहिए। हमें गरीबों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। वह भी समाज का हिस्सा है उनके दुःखों को कम करने का प्रयत्न करना चाहिए।

Question 10.

Read the extract given below and answer in ***Hindi*** *the questions that follow :*

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

''मैं पूर्णता की खोज में
दर-दर भटकता ही रहा
प्रत्येक पग पर कुछ-न-कुछ
रोड़ा अटकता ही रहा
पर हो निराशा क्यों मुझे ?
जीवन इसी का नाम है।
चलना हमारा काम है।''

[चलना हमारा काम है— शिवमंगल सिंह 'सुमन']

[Chalna Hamara Kaam Hai — Shivmangal Singh 'Suman']

(i) *कवि ने मनुष्य के जीवन के बारे में क्या कहा है तथा क्यों ?* [2]

(ii) *कवि के अनुसार जीवन का महत्व किसमें है ? स्पष्ट कीजिए।* [2]

(iii) *जीवन में सुख-दु:ख और आशा-निराशा के प्रति हमारा क्या दृष्टिकोण होना चाहिए ? अपने दु:खों और निराशा के लिए हमें किसको दोष देना उचित नहीं है तथा क्यों ? समझाकर लिखिए।* [3]

(iv) *प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने पाठकों को क्या सन्देश दिया है ?* [3]

Answer 10.

(i) कवि ने मनुष्य के जीवन के बारे में कहा कि जीवन से सफलता के साथ असफलता, सुख के साथ दु:ख और सरलता के साथ बाधाएँ लगी रहती हैं। इसलिए बाधाओं को देखकर निराश नहीं होना चाहिए।

(ii) कवि के अनुसार जीवन का महत्व निरन्तर चलते रहने में है। जो लोग अपने जीवन की गति को निरन्तर कायम रखते हैं वे ही जीवन में सफल होते हैं।

(iii) जीवन में सुख-दु:ख और आशा-निराशा आने पर भी हमें उनसे निराश नहीं होना चाहिए। इसके लिए हमें ईश्वर और भाग्य को दोष नहीं देना चाहिए कि मेरा भाग्य मेरे विपरीत चल रहा है या ईश्वर मेरा साथ नहीं दे रहा है। बल्कि अपने कर्म को निडरता और दृढ़तापूर्वक करते हुए आगे बढ़ना चाहिए और अपना भाग्य स्वयं बनाना चाहिए।

(iv) कवि पाठकों को सन्देश देता है कि जीवन में विकास की ओर हमेशा अग्रसर रहना चाहिए है कवि कहना चाहता है कि हमारे जीवन में सुख-दु:ख, आशा-निराशा आते जाते रहते हैं कभी-कभी अपने भी हमारा साथ छोड़ जाते हैं। लेकिन हार न मानते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए क्योंकि चलना हमारा काम है।

नया रास्ता (सुषमा अग्रवाल)
(Naya Raasta — Sushma Agarwal)

Question 11.

Read the extract given below and answer in ***Hindi*** *the questions that follow :*

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

अमित मेज पर बैठा खाना खाने लगा। माँ भी उसके पास बैठ गईं। बैठे-बैठे वह न जाने किन विचारों में खो गई और एकटक अमित की ओर ही देखती रही।

(i) *माँ अमित की तरफ देखते हुए क्या सोच रही थी ?* [2]

(ii) *दीपक कौन है ? उन्हें किस बात का कार्ड मिला ?* [2]

(iii) *मधु के बारे में माँ ने अमित से क्या कहा ?* [3]

(iv) *माँ को घर में बहू की कमी क्यों अखरती थी ?* [3]

Answer 11.

(i) माँ अमित की तरफ देखकर सोच रही थी कि दीपक अमित से दो वर्ष छोटा है और उसका विवाह हो रहा है।

(ii) दीपक अमित के मामा का लड़का है। अमित की माँ का भतीजा है और उन्हें दीपक की शादी का कार्ड मिला है।

(iii) मधु के बारे में माँ ने अमित से कहा कि उसकी परीक्षाएँ चल रही है वह जा नहीं पायेगी और अकेले घर पर किसके सहारे छोड़कर जाएँ।

(iv) अमित की माँ को घर में बहू की कमी अखरती थी क्योंकि अमित और उसके पिताजी फैक्ट्री चले जाते थे और मधु अपने कॉलेज, इसलिए अकेले होने पर उन्हें बहु की कमी अखरती थी। वे सोचती थी कि बहु घर में होती तो उन्हें अकेले न रहना पड़ता। घर में रौनक रहती और समय का पता ही नहीं चलता।

Question 12.

Read the extract given below and answer in ***Hindi*** *the questions that follow :*

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"दूसरे ही क्षण मीनू उसके सामने आ गई और खुशी से उसके हाथ चूम लिये। अरे मीनू ! आज तो बहुत प्रसन्न दिखाई दे रही हो। क्या बात है ? नीलिमा ने पूछा।"

(i) *मीनू कौन है ? उसकी प्रसन्नता का कारण क्या है ?* [2]

(ii) *'उसके' सर्वनाम का प्रयोग किसके लिए किया गया है ? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए।* [2]

(iii) *मीनू के चेहरे पर किस बात को सोचकर उदासी छा जाती है ? मीनू की उदासी कब और किस प्रकार दूर होती है ? समझाकर लिखिए।* [3]

(iv) *प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।* [3]

Answer 12.

(i) मीनू 'नया रास्ता' नामक उपन्यास की नायिका है। वह दयाराम जी की सबसे बड़ी पुत्री है। उसकी खुशी का कारण था कि उसे देखने लड़के वाले आ रहे थे। वे मेरठ में रहते थे। उन्हें मीनू का फोटो पसन्द आ गया था। इसी खुशी को अपनी सहेली नीलिमा को बताने आई थी।

(ii) 'उसके' सर्वनाम का प्रयोग नीलिमा के लिए किया गया है। नीलिमा मीनू की पक्की सहेली थी। वह बहुत सुन्दर थी। वह अपने पति सुरेन्द्र के साथ एक सुखी जीवन बिता रही थी।

(iii) मीनू के चेहरे पर उदासी इसलिए छा जाती है कि उसकी फोटो तो सबको पसन्द आ जाती थी लेकिन रंग तथा कद के कारण लड़के वाले उसे नापसन्द कर जाते थे। उसकी उदासी तब दूर होती है। जब मीनू का भाई रोहित और नीलिमा की माँ आती हैं और रोहित बताता है कि मीनू एम. ए. में प्रथम श्रेणी पास हुई है और नीलिमा द्वितीय श्रेणी में।

(iv) उपन्यास का उद्देश्य नारी जीवन के संघर्ष को दर्शाना है। जीवन के नये आयाम को दिखाना है। इस उपन्यास की नायिका मीनू परिस्थितियों से निराश नहीं होती बल्कि जीवन का नवीन रास्ता चुनकर वह एक नए व्यक्तित्व के रूप में निखर कर आती है।

Question 13.

Read the extract given below and answer in ***Hindi*** *the questions that follow :*

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"परन्तु तुम ये तो सोचो कि आजकल शादी के बाद ही दावत दी जाती है। यदि हम प्रीतिभोज नहीं देंगे तो दुनिया वाले क्या कहेंगे और फिर बड़े घर की लड़की आ रही है। दावत नहीं देंगे तो सब लोग बात बनाएँगे।"

(i) *उपर्युक्त कथन किसने, किस अवसर पर कहा था ?* [2]

(ii) *'बड़े घर की लड़की' किसको कहा गया है ? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए।* [2]

(iii) *उपर्युक्त कथन के विषय में अमित के क्या विचार हैं ? वह इस शादी से सहमत क्यों नहीं है ? धनीमल जी ने शादी के प्रस्ताव के साथ क्या लालच दिया था ?* [3]

(iv) *आजकल के मध्यमवर्गीय परिवारों में विवाह आदि रीति-रिवाजों के अवसर पर होने वाले फिजूलखर्चे पर अपने विचार लिखिए।* [3]

Answer 13.

(i) उपर्युक्त कथन अमित के पिताजी मायाराम ने अपनी पत्नी से कहा था जब उनके घर में अमित की शादी की तैयरियाँ चल रही थीं।

(ii) बड़े घर की लड़की सरिता को कहा गया है जो धनीमल जी की सबसे छोटी पुत्री है जिसका विवाह अमित के साथ तय हुआ है। वह अधिक सुन्दर नहीं है पढ़ाई में भी अच्छी नहीं है तथा उसे फैशन में रहने की आदत है। उसे पेंटिंग और ड्राइविंग का शौक है।

(iii) अमित अपनी शादी में कोई रुचि नहीं ले रहा था। पूछने पर कह देता था कि जैसा आप उचित समझें। वह इसलिए सहमत नहीं था क्योंकि उसे लगता था कि बड़े घर की बेटी माता-पिता की सेवा नहीं कर पायेगी। धनीमल जी ने शादी के प्रस्ताव के साथ-साथ यह लालच दिया कि वह अपनी बेटी को एक, तीन लाख का फ्लैट भी देंगे।

10 YEARS QUESTION PAPER.COM
ICSE BOARD X
10YearsQuestionPaper.com

(iv) आजकल विवाह के रीति रिवाजों में आडंबर दिखावा और नये-नये खर्चे जुड़ते जा रहे हैं। बड़े-बड़े पार्टी हॉल, विभिन्न प्रकार के खाद्य व्यंजन, सौन्दर्य प्रसाधन आदि पर मध्यमवर्गीय परिवार भी दिखावा करने लगा है। एक मध्यमवर्गीय परिवार में जहाँ पहले तीन चार सौ लोग आमन्त्रित होते थे आज उनकी संख्या हजार के करीब पहुँच चुकी है।

एकांकी संचय
[Ekanki Sanchay]

Question 14.

Read the extract given below and answer in ***Hindi*** *the questions that follow :*

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

''काश कि मैं निर्मम हो सकती, काश कि मैं संस्कारों की दासता से मुक्त हो सकती ! हो पाती तो कुल धर्म और जाति का भूत मुझे तंग न करता और मैं अपने बेटे से न बिछुड़ती।''

[संस्कार और भावना — विष्णु प्रभाकर]

[Sanskar Aur Bhavna — Vishnu Prabhakar]

(i) *वक्ता कौन है ? यह वाक्य वह किसे कह रही है ?* **[2]**

(ii) *'संस्कारों की दासता सबसे भयंकर शत्रु है' यह कथन एकांकी में किसका है ? उसने ऐसा क्यों कहा ?* **[2]**

(iii) *संस्कारों की दासता के कारण वक्ता को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?* **[3]**

(iv) *प्रस्तुत एकांकी द्वारा एकांकीकार ने क्या सन्देश दिया है ?* **[3]**

Answer 14.

(i) वक्ता माँ है। यह वाक्य वह अपनी बहु और अतुल की पत्नी से कह रही है।

(ii) यह कथन एकांकी में माँ का है। उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह संस्कार जैसी रूढ़िवादिता में फँसी हुई थी। इसी कारण वह विजातीय बहू को स्वीकार नहीं कर पाई और पुत्र से अलग होकर दु:खी जीवन जी रही है। अत: संस्कारों के गुलाम बन जीवन जीना हमारा सबसे बड़ा शत्रु है।

(iii) वह अपने मनमुताबिक जीवन नहीं जी सकी और अपने पुत्र से अलग होकर दु:खी जीवन जी रही थी। वह नवीन बातों को अपना नहीं पाई। कुल, धर्म, जातिवाद जैसी बातों की कट्टर दुश्मन बनी रही। साथ में रह रहे दूसरे बहु बेटे की निकटता भी प्राप्त नहीं कर सकी।

(iv) एकांकी द्वारा उन्होंने बताया है कि कई बार हमारे संस्कार हमारी बेड़ियाँ बन जाते हैं। उसके दास बन हम अपनी भावनाओं का गला घोंट देते हैं इसलिए आज़ के बदलते आधुनिक समाज में सही जीवन व्यतीत करने के लिए जात-पात रूढ़िवादिता से अलग होकर नये परिवेश में जीना चाहिए।

Question 15.

Read the extract given below and answer in ***Hindi*** *the questions that follow :*

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

''जानता हूँ युधिष्ठिर ! भलीभाँति जानता हूँ। किन्तु सोच लो, मैं थककर चूर हो गया हूँ, मेरी सभी सेना तितर-बितर हो गई है, मेरा कवच फट गया है, मेरे शस्त्रास्त्र चुक गये हैं। मुझे समय दो युधिष्ठिर ! क्या भूल गए मैंने तुम्हें तेरह वर्ष का समय दिया था ?''

[महाभारत की एक साँझ — भारत भूषण अग्रवाल]

[Mahabharat Ki Ek Sanjh — Bharat Bhushan Agarwal]

(i) *वक्ता कौन है ? वह क्या जानता था ?* **[2]**

(ii) *वक्ता इस समय असहाय क्यों हो गया था ? क्या वह वास्तव में असहाय था ?* **[2]**

(iii) *श्रोता कौन है ? श्रोता को तेरह वर्ष का समय कैसे दिया था ? इस कथन को आप कितना सही मानते हैं ?* **[3]**

(iv) *वक्ता ने जो समय दिया था उसका उद्देश्य क्या था ? क्या वह अपने उद्देश्य में सफल हो सका ? स्पष्ट कीजिए।* **[3]**

Answer 15.

(i) वक्ता दुर्योधन है। वह जानता था कि महाभारत के युद्ध के लिए पाण्डव उसे ही दोषी मानेंगे। युद्ध का कारण पांडव उसकी राजहठ मानकर उसकी जान लेना चाहते हैं। दुर्योधन ने पांडवों को बहुत कष्ट दिया था। वे उसे जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।

(ii) वक्ता अर्थात् दुर्योधन असहाय इसलिए हो गया था क्योंकि उसकी सारी सेना मारी जा चुकी थी। वह स्वयं अस्त्र-शस्त्र से विहीन हो गया था उसका कवच कट चुका था। वह थक चुका था। उसका मनोबल टूट चुका था। पांडवों के साथ युद्ध करने का उसमें साहस नहीं था। नहीं, वह असहाय नहीं था। वह मौका चाहता था कि पांडवों को कैसे परास्त कर सके।

(iii) श्रोता युधिष्ठिर हैं। श्रोता को तेरह वर्ष का समय देने की बात सरासर गलत है वह पांडवों को दूर रखके उन्हें शक्तिहीन करने के लिए, उनका मनोबल तोड़ने के लिए उसने यह युक्ति अपनाई थी।

(iv) वक्ता ने जो समय दिया था उसका उद्देश्य था पांडवों को सत्ता से दूर रखना तथा तेरह वर्ष के समय में वह अपनी सैन्य शक्ति को बढ़ा सके।

लेकिन ऐसा करके भी वह अपनी योजना में सफल नहीं हो पाया। क्योंकि वन में रहकर भी पांडवों ने अपनी शक्ति बढ़ाई और निकट सम्बन्धियों से मेलजोल बढ़ाया। देवताओं को प्रसन्न करके दिव्यास्त्र प्राप्त किये जिसके कारण वह महाभारत का युद्ध जीत सके।

Question 16.

Read the extract given below and answer in ***Hindi*** *the questions that follow :*

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"आज कुसमय नाच-रंग की बात सुनकर मेरे मन में शंका हुई थी। इसलिए मैंने कुँवर को वहाँ जाने से रोक दिया था। सम्भव था कि कुँवर वहाँ जाते और बनवीर अपने सहायकों से कोई काण्ड रच देता।"

[दीपदान — डॉ. रामकुमार वर्मा]

[Deepdan — Dr. Ram Kumar Verma]

(i) *उपर्युक्त कथन का वक्ता कौन है ? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए।* **[2]**

(ii) *नाच-रंग का आयोजन किसने और किस उद्देश्य से किया था ?* **[2]**

(iii) *बनवीर कौन है ? उसका परिचय देते हुए उसका चरित्र-चित्रण कीजिए।* **[3]**

(iv) *'दीपदान' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता बताइये तथा एकांकी के माध्यम से एकांकीकार ने क्या शिक्षा दी है ?* **[3]**

Answer 16.

(i) उपर्युक्त कथन का वक्ता पन्ना धाय है। वह चित्तौड़ के महाराणा सांगा के पुत्र कुँवर सिंह की संरक्षिका है। वह सच्ची एवं कर्त्तव्यनिष्ठ सेविका है। राजभक्त है, ममतामयी है, बलिदानी और त्यागी, बुद्धिमान एवं भविष्यदर्शी है।

(ii) नाच रंग का आयोजन बनबीर ने करवाया था उसका उद्देश्य था कि नगर के लोग नाच रंग में डूबे रहेंगे और वह उदय सिंह को मार सकेगा, क्योंकि उसके रहते बनवीर कभी राजा नहीं बन सकता था।

(iii) बनबीर महाराणा के भाई पृथ्वीराज का दासी पुत्र है। वह अत्यन्त क्रूर, विलासी और धूर्त किस्म का व्यक्ति है जो राज्य के लालच में पहले विक्रमादित्य की हत्या करता है फिर कुँवर उदय सिंह को मारना चाहता है जिससे बिना किसी बाधा के राज्य कर सके।

(iv) इस एकांकी के लिए दीपदान शीर्षक सर्वथा उपयुक्त एवं सार्थक है। क्योंकि, किसी भी रचना का शीर्षक उसकी कथा के मूल के निकट उद्देश्यपूर्ण संक्षिप्त एवं रोचक होना चाहिए। इस एकांकी में पूरी कथा का सार निहित है। क्योंकि बनवीर उदयसिंह को मारने के लिए मयूरपंख नामक कुंड में तुलजा भवानी की पूजास्वरूप दीपदान का उत्सव आयोजित करता है तथा नाच रंग का कार्यक्रम अयोजित करता है। उसकी आड़ में वह उदयसिंह को मारने का प्रयास करता है लेकिन पन्ना धाय के कारण उसका षडयन्त्र पूरा नहीं हो पाता है। पन्ना अपने पुत्र चंदन का बलिदान कर देती है। चित्तौड़ के दीपक को बचाने के लिए अपने कुल के दीपक (चंदन) को दान कर देती है, इसलिए शीर्षक सार्थक है। इस एकांकी के माध्यम से नागरिक के कर्तव्य (राष्ट्र की सुरक्षा) को सफलता से दिखाया है। देश प्रेम की भावना की शिक्षा दी है। इस एकांकी में एकांकीकार ने शिक्षा दी है; कि राष्ट्रप्रेम पुत्र प्रेम से बड़ा और महान है।

●●